Patrika (Indore), 23rd June 2020, Page-1

आईआईटी में तैयारी: प्रबंधन को अगले कुछ महीनों में वैक्सीन बनने की उम्मीद

देश को इंदौर देगा कोरोना की दवा, पीएमओ की निगाह

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. लगातार पांव पसारते जा रहे कोरोना संक्रमण के असर को खत्म करने के लिए वैक्सीन का काम जारी है। देश के कुछ प्रमुख संस्थान इस कोशिश में जुटे हैं। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) इंदौर में भी वैक्सीन के लिए एक साथ दो प्रोजेक्ट चल रहे हैं। इनमें से एक की निगरानी सीधे प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) से की जा रही है। उम्मीद है कि कुछ महीनों में वैक्सीन बनकर तैयार हो जाएगी।

आईआईटी के प्रभारी निदेशक नीलेश कुमार जैन के अनुसार, संस्थान में कोविड-19 की वैक्सीन बनाने के लिए दो प्रोजेक्ट पर काम चल रहा है। दोनों की सफलता को लेकर हम आशांवित हैं। जल्द ही वैक्सीन तैयार करने के लिए पीएचडी कर रहे रिसर्चर्स को दोबारा कैंपस में बुलाया जा रहा है, ताकि काम में तेजी आए।

दो प्रोजेक्ट पर काम

पीएचडी कर रहे रिसर्चर्स को दोबारा बुलाया जा रहा है कैंपस में

बता दें, हाल ही में मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा घोषित नेशनल इंस्टिट्यूट रैंकिंग फ्रेमवर्क में आईआईटी इंदौर ने दसवां स्थान हासिल किया है।

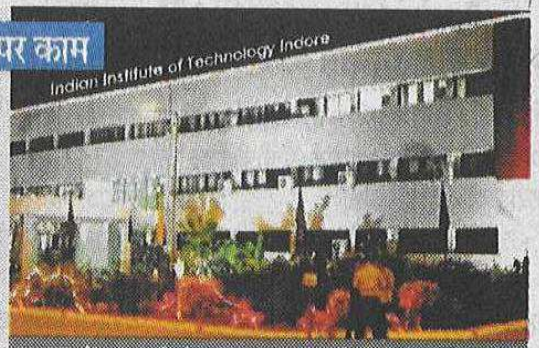

शोधार्थियों के लिए हॉस्टल में इंतजाम

कोरोना की वैक्सीन बनाने की कोशिश के बीच कई शोधार्थियों को परिवार से दूर रहना होगा। सिमरोल स्थित परिसर में सिर्फ 54 रेसीडेंशियल यूनिट हैं, जबकि फैकल्टी की संख्या ही 143 है। नॉन टीचिंग स्टाफ के 220 लोगों के लिए भी 145 यूनिट हैं। प्रबंधन शोधार्थियों के लिए होस्टल में ठहरने का इंतजाम कर रहा है।

रोजाना नहीं होगी आने-जाने की अनुमति

प्रो. जैन का कहना है कि देश में कोरोना की दस्तक से पहले ही आईआईटी ने इसके तोड़ पर मंथन करना शुरू कर दिया था। ये समय अपने फायदे के बारे में न सोचते हुए समाज और दुनिया को मुसीबत से बचाने का है। इसलिए कोविड-19 की वैक्सीन पर तेजी से काम चल रहा है। संस्थान ने सभी पोस्टडॉक्स को परिसर में आने और रहने के लिए कहा है, क्योंकि रोजाना आने-जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

छिंदवाड़ा • जगदलपुर • जबलपुर • जयपुर • जोधपुर • दिल्ली • नागौर • पाली • बाड़मेर • बांसवाड़ा • बिलासपुर • बीकानेर • बेंगलूरु • भिलाई • भीलवाड़ा • भोपाल • मुंबई • रतलाम • रायपुर • सतना • सागर • सीकर • सूरत • शहडोल • श्रीगंगानगर • होशंगाबाद